भारतीय पारंपरिक चिकित्सा पद्धति

विश्व को आरोग्यता का एक उपहार

परिचय

भारतीय सभ्यता में ज्ञान को हमेशा से बहुत अधिक महत्व दिया गया है। यह हमारे बौद्धिक ग्रंथों के विशाल संग्रह, दुनिया के सबसे बड़े पांडुलिपि संग्रह और ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित विद्वानों तथा दर्शनों की एक संरक्षित परंपरा से भी स्पष्ट हो जाता है। श्रीमद्भगवद्गीता में, भगवान कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि ज्ञान व्यक्ति का महान शुद्धिकर्ता और मुक्तिदाता है। भारत की ज्ञान परंपरा प्राचीन और गंगा नदी के प्रवाह की तरह अविरल है। यह ज्ञान वेदों (उपनिषदों) से लेकर श्री अरबिंदो और अन्य आधुनिक विद्वानों तक, भारत में सभी तार्किक एवं काल्पनिक (अलौकिक) खोजों का केंद्र रहा है।

इस डॉक्यूमेंट में हम निम्नलिखित पर चर्चा करेंगे:

1. भारतीय पारंपरिक ज्ञान पद्धति के वे कौन-से घटक हैं, जो वैश्विक स्तर पर आरोग्यता के लिए महत्वपूर्ण हैं? 2
2. पारंपरिक चिकित्सा पद्धति वैश्विक स्तर पर सामाजिक आरोग्यता को किस प्रकार बढ़ावा दे सकती है? 3
3. बेहतर स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के समक्ष क्या चुनौतियां विद्यमान हैं? 5
4. पारंपरिक चिकित्सा को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने कौन-से कदम उठाए हैं? 6
5. पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण हेतु कौन-से कदम आवश्यक हैं? 6
6. निष्कर्ष 7
7. टॉपिकः एक नज़र में 8
8. बॉक्स एवं चित्र 9

भारतीय पारंपरिक ज्ञान में **स्वास्थ्य और आरोग्यता** (यानी सेहतमंद रहने) पर विशेष बल दिया गया है। इसमें संपूर्ण भौतिक शरीर, मस्तिष्क और आत्मा के समग्र स्वास्थ्य एवं आरोग्यता पर बल दिया गया है। ज्ञान का विशाल भंडार और उपचार की विभिन्न पद्धतियां, भारत द्वारा विश्व को दिए गए महान उपहार हैं। बीमारियों, संघर्षों और अराजकता से ग्रस्त इस विश्व में, भारतीय औषधीय विज्ञान की प्राचीन प्रणाली एवं ध्यान पद्धतियों को धीरे-धीरे भौगोलिक सीमाओं और क्षेत्रीय बंधनों से परे सभी लोगों द्वारा अपनाया जा रहा है। इस ज्ञान एवं इन पद्धतियों का निर्बाध रूप से विस्तार हो रहा है और ये विश्व भर में करोड़ों लोगों के लिए सहायक सिद्ध हो रही हैं।

1. भारतीय पारंपरिक ज्ञान पद्धति के वे कौन-से घटक हैं, जो वैश्विक स्तर पर आरोग्यता के लिए महत्वपूर्ण हैं?

पारंपरिक ज्ञान या 'स्थानीय ज्ञान' वस्तुतः मानव द्वारा प्रतिकूल स्थितियों में जीवन और अस्तित्व की जटिलताओं को समझने **हेतु संरक्षित की गई उपलब्धियों का रिकॉर्ड है।** पारंपरिक ज्ञान **अस्तित्व और विकास के महान मानवीय प्रयोगों के उपरांत प्राप्त किया गया है।** ये ज्ञान तकनीकी, सामाजिक, संगठनात्मक या सांस्कृतिक प्रकृति के हो सकते हैं।

भारतीय पारंपरिक ज्ञान पद्धतिः

- इसमें ऐसे व्यवहारिक ज्ञान, तकनीक और पद्धतियां शामिल हैं जो एक समुदाय के अंदर पीढ़ी-दर-पीढ़ी विकसित हुईं, संरक्षित रखी गईं और स्थानांतरित की जाती रही हैं।
- ये प्रायः समुदाय की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान के महत्वपूर्ण भाग के रूप में विकसित हुई हैं।
- ये वैदिक साहित्य (वेद, उपनिषद), उपवेद इत्यादि पर आधारित हैं।
- ये अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और कठोर विश्लेषण से विकसित हुए **ज्ञान, विज्ञान** और **जीवन दर्शन** से युक्त हैं।

भारतीय पारंपरिक ज्ञान पद्धति के प्रमुख घटक

- **सिविल इंजीनियरिंगः** सिंधु घाटी सभ्यता योजनाबद्ध तरीके से नगरों को बसाने वाली वाली विश्व की पहली सभ्यता थी। इन शहरों की मुख्य विशेषताएं थीं- भूमिगत जल निकासी, नागरिक स्वच्छता, हाइड्रोलिक इंजीनियरिंग, एयर-कूलिंग आदि।
  - **भारत की स्वदेशी प्रौद्योगिकियां** डिजाइन, योजना प्रणाली, जल-आपूर्ति, यातायात प्रबंधन, प्राकृतिक एयर कंडीशनिंग, पत्थर पर की गई परिष्कृत कारीगरी और विनिर्माण इंजीनियरिंग में अत्यंत उत्कृष्ट थीं।
- **धातु प्रौद्योगिकीः** भारत में विनिर्माण कार्यों के लिए अनेक नवीन उपकरणों का आविष्कार किया गया, जिनमें नुकीले सिरे पर छेद वाली सुई, एक खोखली ड्रिल और आरी शामिल हैं।
  - **भारत, जंग रहित लोहा बनाने वाला पहला देश था।**
  - अंग्रेजों ने धातुकर्म प्रक्रियाओं का विश्लेषण करने के लिए भारत में अनेक टीमें भेजीं थीं। इसके बाद उन्होंने इन भारतीय प्रक्रियाओं को ब्रिटेन में अपनाया था।
- **वस्त्रः** भारत प्राचीन समय से ही सूती और रेशमी वस्त्रों का प्रमुख उत्पादक रहा है। कृषि के बाद बुनाई भारतीय अर्थव्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण भाग था।
  - ब्रिटेन द्वारा निर्मित कई मशीनों में भारतीय डिजाइनों का उपयोग किया जाता था, जिन्हें भारत में बहुत पहले विकसित किया गया था।
- **नौवहन और जहाज निर्माणः** भारत महासागर से होकर की जाने वाली प्रारंभिक ज्ञात व्यापार प्रणालियों में सहभागी रहा है।
  - विश्व के कुछ शुरुआती सबसे बड़े और सबसे परिष्कृत जहाज **भारत और चीन में बनाए गए थे।**
  - बोट (Boat) शब्द के लिए संस्कृत के 'नाव' शब्द का प्रयोग किया गया है और यह 'नेविगेशन' तथा 'नेवी' जैसे इंग्लिश शब्दों के लिए मूल शब्द भी है।
- **जल संचयन प्रणालियांः** वैज्ञानिकों का अनुमान है कि भारत में मानव निर्मित लगभग 13 लाख झीलें और तालाब थे, जिनमें से कुछ झीलें 250 वर्ग मील जितनी बड़ी थीं।
  - हाल ही में, इनमें से हजारों का जीर्णोद्धार किया गया है और परिणामस्वरूप कई स्थानों पर वर्ष भर प्रचुर मात्रा में जल की उपलब्धता सुनिश्चित हो पाई है।
  - सिंचाई तथा पीने आदि के लिए वर्षा जल के संचयन पर ध्यान दिया जाता था।
- **गणित, तर्कशास्त्र और भाषा विज्ञानः** भारतीयों ने एडवांस मैथ का विकास किया, जिसमें शून्य की अवधारणा, दशमलव पद्धति या दाशमिक संख्या पद्धति या दशाधारी संख्या पद्धति और अनेक महत्वपूर्ण त्रिकोणमितीय एवं बीजगणितीय सूत्र शामिल हैं। इनका उपयोग अब विश्व भर में किया जा रहा है।
  - भारत के महान विद्वान पाणिनि को **भाषा-विज्ञान का जन्मदाता माना जाता है और उनका संस्कृत व्याकरण अभी भी विश्व की किसी भी अन्य भाषा के व्याकरणिक ग्रंथ की तुलना में अधिक उत्कृष्ट और परिष्कृत है।**
- **कृषि तकनीकेंः** भारत में ऐतिहासिक रूप से ही अर्थव्यवस्था में कृषि उत्पादन की विशाल हिस्सेदारी रही है और विश्व के अन्य हिस्सों की तुलना में यहां एक बड़ी आबादी कृषि पर निर्भर रही है।
  - वर्तमान में भारत और विश्व भर में पारंपरिक गैर-रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग बढ़ रहा है और इसके बेहतर परिणाम भी प्राप्त हो रहे हैं। कुछ बाजारों में तो इसने यूनियन कार्बाइड के उत्पादों की जगह ले ली है।
- **पारंपरिक चिकित्साः** भारतीय ज्ञान पद्धति का उद्देश्य **समग्र स्वास्थ्य, मनोविज्ञान, तंत्रिका विज्ञान, प्रकृति, पर्यावरण और सतत विकास** जैसे कई क्षेत्रों की समकालीन सामाजिक समस्याओं को हल करने के लिए और अधिक शोध का समर्थन करना व सुविधा प्रदान करना है।
  - भारत ने विश्व को **आयुष स्वास्थ्य-देखभाल पद्धति के रूप में एक अनमोल उपहार** दिया है। आयुष, स्वास्थ्य देखभाल के व्यापक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें प्राचीन ज्ञान और समग्र स्वास्थ्य देखभाल की पद्धतियां शामिल हैं। इसमें शामिल हैं:

चित्र 1: आयुष पद्धति

आयुर्वेदः इस पद्धति में रोगों के उपचार के साथ-साथ स्वस्थ जीवन पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जाता है तथा व्यक्तिगत आरोग्यता पर विशेष बल दिया जाता है।

योग और प्राकृतिक चिकित्साः यह आध्यात्मिक व्यायाम का एक रूप है जो स्वस्थ जीवन के लिए मस्तिष्क एवं शरीर के बीच सामंजस्य स्थापित करने पर केंद्रित है।

यूनानीः इस चिकित्सा पद्धति की उत्पत्ति ग्रीस (यानी यूनान) में हुई थी। इस पद्धति में मरीज के व्यक्तिगत मिजाज के हिसाब से इलाज किया जाता है। इसलिए यह चिकित्सा की एक अद्वितीय पद्धति भी है।

सिद्धः इसमें रोगों के कारणों की पहचान की जाती है। इसके लिए नाड़ी, मूत्र व आंखों की जांच की जाती है; और शरीर, जीभ आदि के रंगों का अध्ययन किया जाता है।

होम्योपैथीः इसकी उत्पत्ति जर्मनी में हुई थी। यह आरोग्य के प्राकृतिक नियम पर आधारित है।

सोवा-रिग्पाः यह जीवन को स्वस्थ बनाए रखने के लिए पांच तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) के अनुपात में संतुलन बनाए रखने पर ध्यान देती है।

- वर्तमान में, स्वास्थ्य देखभाल की मुख्य प्रणाली अधिकांशतः आधुनिक चिकित्सा और दवा तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य ढांचे पर आधारित है। हालांकि, **विश्व स्तर पर सार्वजनिक स्वास्थ्य-देखभाल में पारंपरिक चिकित्सा पद्धति के महत्त्व और इसकी क्षमता में निरंतर वृद्धि हो रही है।** कई देशों में पारंपरिक चिकित्सा उत्पादों, पद्धतियों और चिकित्सकों से संबंधित राष्ट्रीय नीतियों, विनियामकीय ढांचे एवं रणनीतिक योजनाओं के माध्यम से इसे अपनी राष्ट्रीय स्वास्थ्य-देखभाल प्रणालियों में सफलतापूर्वक एकीकृत किया जा रहा है। कई अध्ययनों में पाया गया है कि **भारत में विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में 65 प्रतिशत आबादी** अपनी प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल के लिए आयुर्वेद और औषधीय जड़ी-बूटियों पर निर्भर है।

बॉक्स 1.1. एक छोटी सी वार्ता! हल्दी के औषधीय गुण

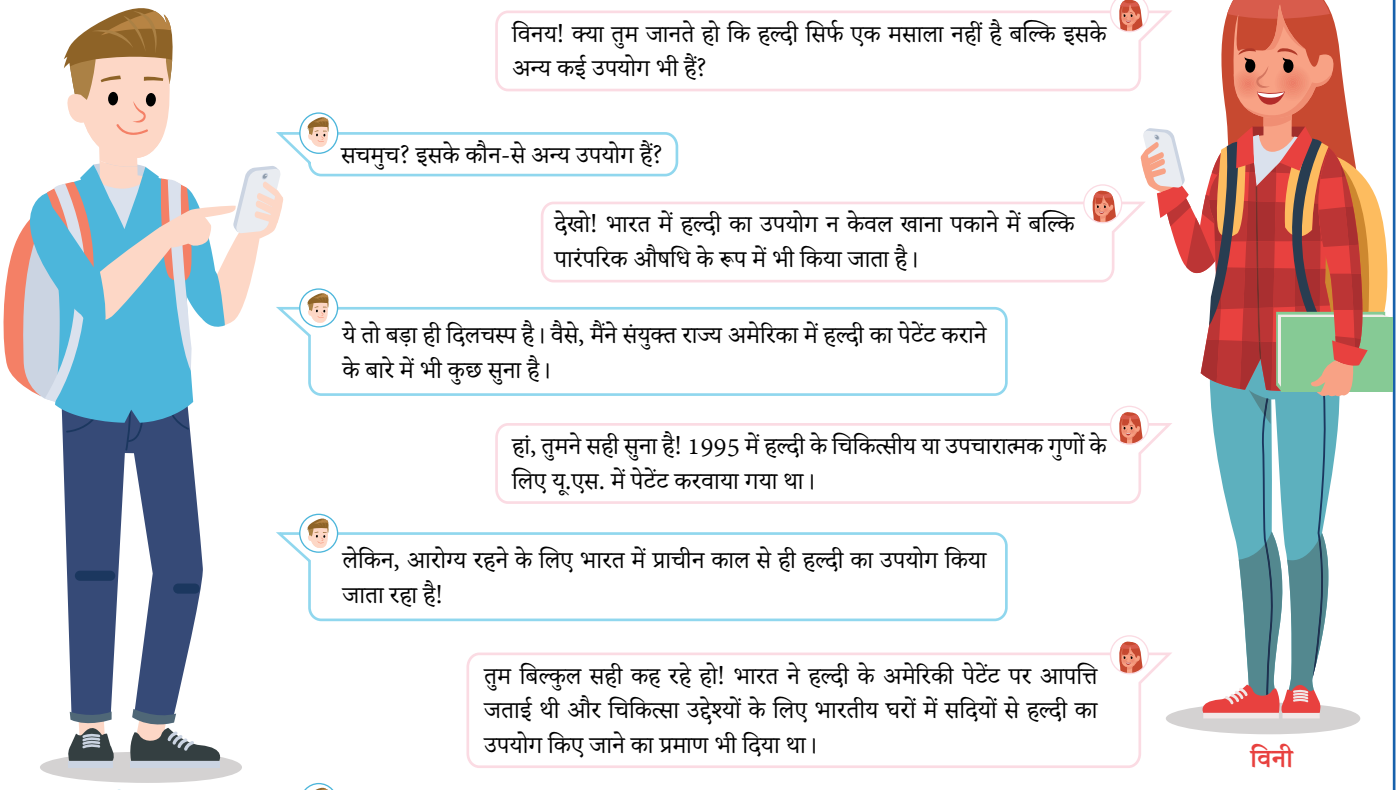

2. पारंपरिक चिकित्सा पद्धति वैश्विक स्तर पर सामाजिक आरोग्यता को किस प्रकार बढ़ावा दे सकती है?

- **निम्न और मध्यम आय वाले देशों की प्राथमिक स्वास्थ्य-देखभाल पद्धतिः** पारंपरिक चिकित्सा पद्धति अधिकांश आबादी के लिए स्वास्थ्य देखभाल सेवा का प्राथमिक रूप है।
  - विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की एक रिपोर्ट में यह अनुमान लगाया गया है कि **विश्व की 80 प्रतिशत आबादी** अपनी प्राथमिक स्वास्थ्य-देखभाल सेवा के लिए पारंपरिक चिकित्सा पद्धति पर निर्भर है।
- **"वसुधैव कुटुंबकम" लोकाचार पर आधारित होनाः** यह दर्शन समस्त मनुष्य के परस्पर जुड़ाव तथा एक स्वस्थ और अधिक सामंजस्यपूर्ण विश्व के निर्माण हेतु साथ मिलकर कार्य करने के महत्त्व पर बल देता है।
  - इस दर्शन का उपयोग पारंपरिक चिकित्सा के क्षेत्र में किया जा सकता है ताकि सभी के लिए बेहतर स्वास्थ्य और आरोग्यता सुनिश्चित की सके।
- **वर्तमान चुनौतियों का समाधान करनाः** क्रॉनिक बीमारियों का बढ़ता बोझ, एंटीबायोटिक-प्रतिरोधी संक्रमणों का प्रसार और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं की कमी जैसी चुनौतियों का समाधान पारंपरिक चिकित्सा पद्धति से संभव है।
- **'वन हेल्थ' दृष्टिकोणः** पारंपरिक चिकित्सा पद्धति में मनुष्यों, घरेलू एवं जंगली जीवों, पौधों और समग्र पर्यावरण (पारिस्थितिक तंत्र सहित) का स्वास्थ्य आपस में निकटता से जुड़ा हुआ है और एक-दूसरे पर निर्भर है। यह विश्व स्वास्थ्य संगठन के **'वन हेल्थ' दृष्टिकोण** के अनुरूप है।

चित्र 2: वन हेल्थ दृष्टिकोण

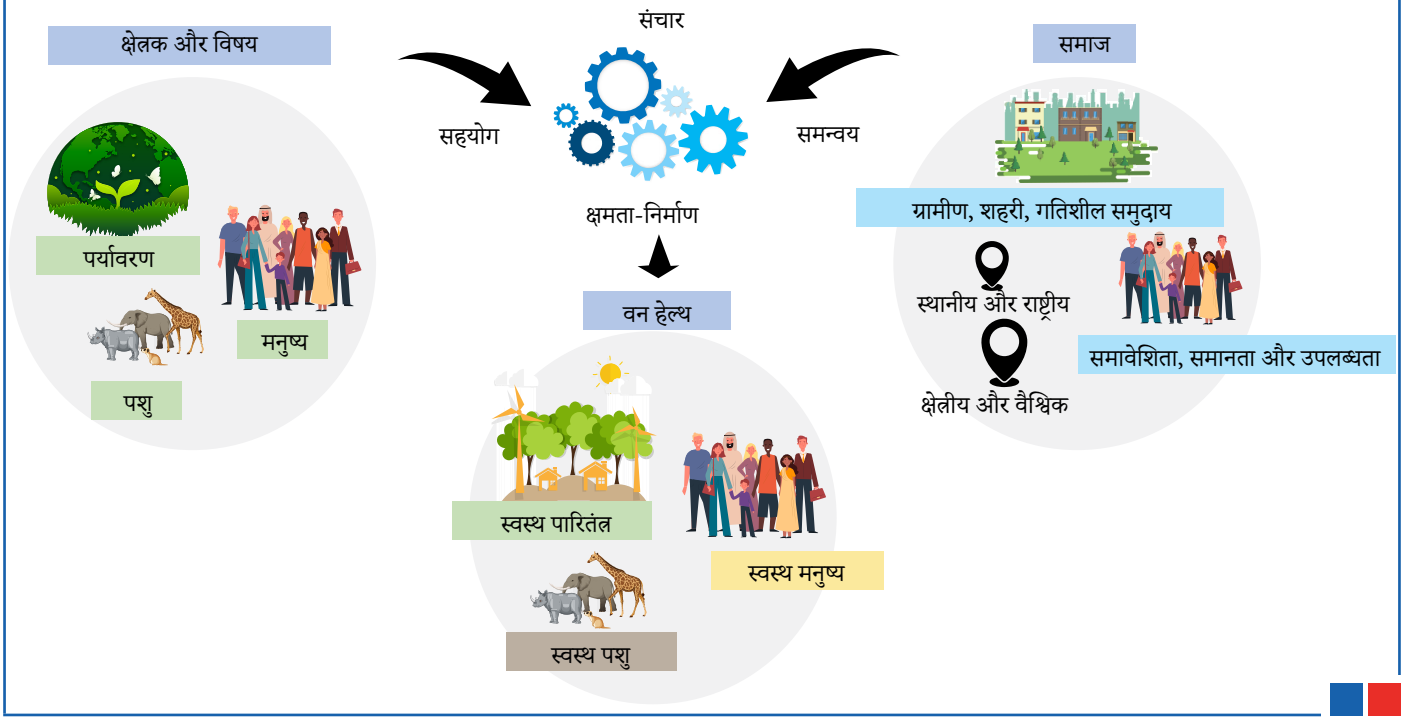

चित्र 3: प्राचीन भारतीय औषधीय पांडुलिपियां

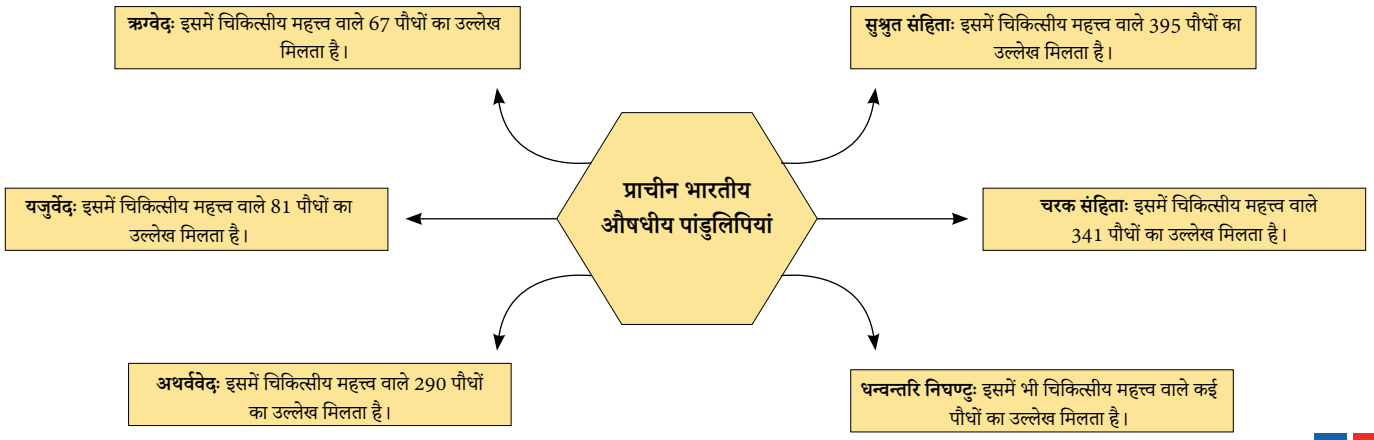

- **पारंपरिक चिकित्सा पद्धति की स्वीकार्यता:** पारंपरिक एवं पूरक चिकित्सा पद्धति पर WHO की वैश्विक रिपोर्ट 2019 के अनुसार, WHO के 88 प्रतिशत सदस्य देशों (170 देश) ने पारंपरिक और पूरक चिकित्सा पद्धति के उपयोग को स्वीकार किया है।
- **पारंपरिक चिकित्सा का पूरक उपचार के रूप में उपयोग:** यह व्यवस्था कई ऐसे विकसित देशों में भी उपयोग की जाती है, जहां स्वास्थ्य प्रणाली की संरचना आमतौर पर बेहतर रूप से विकसित है। उदाहरण के लिए- उत्तरी अमेरिका और कई यूरोपीय देश।
- **समग्र दृष्टिकोण:** पारंपरिक चिकित्सा पद्धति प्रायः **शरीर, मस्तिष्क और आत्मा के अंतर्संबंध** को ध्यान में रखते हुए स्वास्थ्य के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाए जाने पर बल देती है। यह आधुनिक चिकित्सा के दृष्टिकोण के लिए भी सहायक हो सकता है जिसके तहत माना जाता है कि शरीर में सभी रोग जैविक कारणों से उत्पन्न होते हैं।

बॉक्स 2.1 उभरते आयुष क्षेत्रक के आर्थिक आयाम

हाल के वर्षों में आयुष पद्धति आधारित उद्योग में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। यह वृद्धि **रासायनिक दवाओं और उत्पादों के तात्कालिक एवं दीर्घकालिक हानिकारक प्रभावों के बारे में उपभोक्ताओं की बढ़ती जागरूकता** तथा कोविड महामारी के बाद समग्र स्वास्थ्य देखभाल एवं पारंपरिक चिकित्सा की ओर लोगों की बढती रूचि के कारण हो रही है।

- **भारत विश्व में वैकल्पिक दवाओं के शीर्ष निर्यातक देशों में से एक है।** भारत से मुख्यतः जर्मनी एवं फ्रांस जैसे यूरोपीय देश तथा संयुक्त राज्य अमेरिका को इन दवाओं का निर्यात किया जाता है।
- सरकार ने **आयुष क्षेत्रक में 100 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश** (FDI) की अनुमति प्रदान की है।
- 2020 में कोविड महामारी के कारण आर्थिक गतिविधियों में गिरावट आने के बावजूद, आयुष उद्योग का कारोबार **2021 में 20.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर और 2022 में 23.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर** तक पहुंच गया था।
- पिछले दशक के दौरान भारतीय आयुष उद्योग के बाजार के आकार में समग्र रूप से **17 प्रतिशत की वृद्धि** दर्ज की गई है। इसी अवधि के दौरान, इस क्षेत्रक के विभिन्न उत्पाद सेग्मेंट्स की वृद्धि दर समग्र उद्योग की तुलना में अधिक थी।
- **प्लांट डेरिवेटिव्स** (पादपों से प्राप्त उत्पाद) में 21 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। इसके बाद **न्यूट्रास्यूटिकल्स** (20.5 प्रतिशत), **फार्मास्यूटिकल्स (15.8 प्रतिशत), पौधों के अर्क से निर्मित उत्पादों (14.7 प्रतिशत)** और औषधीय पौधों से निर्मित उत्पादों (14.3 प्रतिशत) का स्थान था।

यद्यपि पारंपरिक चिकित्सा क्षेत्रक ने मजबूत निर्यात क्षमता को प्रदर्शित किया है, जिसमें आयुष फार्मास्युटिकल क्षेत्रक ने व्यापार अधिशेष में अग्रणी योगदान दिया है, फिर भी, इस क्षेत्रक में आकर्षण का कारण इस तथ्य में निहित है कि अभी भी इसकी व्यापार क्षमता का बहुत कम उपयोग किया गया है। इसके लिए वैश्विक स्तर पर आयुष ब्रांड में विश्वास स्थापित करने के लिए कई अन्य उपाय करने की भी आवश्यकता है। इन उपायों में शामिल हैं: **घरेलू मानकों के प्रमाणीकरण की प्रक्रिया को मजबूत करना, मूल्य श्रृंखला का पता लगाने की क्षमता सुनिश्चित करना तथा अंतर्राष्ट्रीय मानक निकायों के साथ मिलकर वैश्विक मानक तैयार करना।**

3. बेहतर स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के समक्ष क्या चुनौतियां विद्यमान हैं?

- **विनियमन और मानकीकरण:** हर्बल दवाओं की परिभाषा और वर्गीकरण एक देश से दूसरे देश में अलग-अलग होता है।
  - खाद्य पदार्थों और दवाओं पर लागू विनियमों के आधार पर, एक ही औषधीय पौधे को कई देशों में खाद्य पदार्थ, फंक्शनल फूड, अनुपूरक आहार या हर्बल औषधि के रूप में वर्गीकृत किया गया है। फंक्शनल फूड में शरीर को पोषण देने के साथ-साथ कुछ ऐसे सक्रिय घटक भी होते हैं जो शरीर को लाभ पहुंचाते हैं और जो बायोएक्टिविटी को या तो सुधारते हैं या फिर उसकी कुशलता को और बढ़ाते हैं।
- **बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) व्यवस्था से जुड़ी समस्याएं:**
  - वर्तमान IPR व्यवस्था में पेटेंट मिलने पर किसी उत्पाद का स्वामित्व निजी हाथों में चला जाता है। वर्तमान IPR व्यवस्था का डिज़ाइन इस तरह से किया गया है कि यह व्यक्तियों या निगमों के स्वामित्व को स्वीकार करती है, जबकि पारंपरिक ज्ञान सामूहिक स्वामित्व पर आधारित होता है।
  - IPRs एक निश्चित समय-सीमा के लिए प्रदान किए जाते हैं, जबकि पारंपरिक ज्ञान का स्वामित्व पीढ़ी-दर-पीढ़ी कायम रहता है।
  - वर्तमान IPR व्यवस्था में हर तरह के आविष्कारों की एक निर्धारित परिभाषा है। IPR के मानदंडों में **खोज का नवीन होना तथा औद्योगिक या व्यावसायिक उपयोग के लायक** होना आवश्यक है। दूसरी ओर, पारंपरिक ज्ञान में समय के साथ नई-नई चीजें शामिल होती रहती हैं, यह काफी अनौपचारिक होता है और समय के साथ इसका विकास होता रहता है।

बॉक्स 3.1: पारंपरिक ज्ञान और बौद्धिक संपदा अधिकार

वर्तमान IPR व्यवस्था में पारंपरिक ज्ञान को दो तरीकों से संरक्षित किया जा सकता है:

- **सकारात्मक संरक्षण:** यह पारंपरिक ज्ञान के धारकों को उनके IPR का दुरुपयोग होने पर आवश्यक कार्रवाई करने का अधिकार प्रदान करता है। साथ ही, यह ज्ञान के मौलिक पक्षों के दुरुपयोग के विरुद्ध कानून का सहारा लेने का विकल्प प्रदान करता है।
  - इसके अंतर्गत पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण हेतु विशेष नियम, विनियम एवं कानून बनाना शामिल है। साथ ही, इसमें लाभ-साझाकरण, रॉयल्टी के भुगतान आदि हेतु प्रावधान किए जाने चाहिए।
- **रक्षात्मक तंत्र:** यह पारंपरिक ज्ञान के धारकों द्वारा अपने बौद्धिक संपदा अधिकारों के उल्लंघन को रोकने हेतु उठाए जाने वाले कदमों के बारे में है।
  - ज्ञान संरक्षण की यह पद्धति पारंपरिक ज्ञान के धारकों को उन बौद्धिक संपदा अधिकारों की रक्षा करने में सहायता प्रदान करती है जिनका किसी तीसरे पक्ष द्वारा अवैध रूप से इस्तेमाल किया जाता है।

बौद्धिक संपदा के सुरक्षात्मक (Protective) और रचनात्मक (Constructive) संरक्षणों के बीच कुछ ज्यादा अंतर मौजूद नहीं हैं। इसलिए पारंपरिक ज्ञान की सुरक्षा के लिए दोनों रणनीतियों का सफलतापूर्वक उपयोग किया जाना चाहिए।

- **बायोपाइरेसी** (Biopiracy): भारत के बाहर की फार्मास्युटिकल कंपनियों और संस्थाओं द्वारा यहां के पारंपरिक ज्ञान एवं पद्धतियों का दोहन किया जाना गंभीर चिंता का विषय रहा है।
  - जब पारंपरिक ज्ञान को संजोए रखने वाले समुदायों के योगदान को स्वीकार किए बिना या उन्हें पर्याप्त क्षतिपूर्ति दिए बिना उनके पारंपरिक ज्ञान का पेटेंट कराया जाता है तो उसे **बायोपाइरेसी** कहा जाता है। गौरतलब है कि कई समुदाय अपने पारंपरिक ज्ञान को पीढ़ियों से संजोए रखते हैं। ऐसे में, बायोपाइरेसी पारंपरिक चिकित्सा के समक्ष खतरा पैदा करती है।
- **सुरक्षा और प्रभावकारिता संबंधी चिंताएं:** पारंपरिक उपचार की अनेक पद्धतियां आधुनिक फार्मास्यूटिकल्स के समान क्लिनीकल ट्रायल्स और सेफ्टी टेस्टिंग से नहीं गुजरी हैं।
- **पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के प्रति संदेह और सांस्कृतिक बाधाएं:** कई सारे एलोपैथी चिकित्सक और आधुनिक समाज के अधिकतर लोग पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को संदेह और उपेक्षा की नजर से देखते हैं। इससे चिकित्सा की आधुनिक पद्धतियों के साथ पारंपरिक चिकित्सा पद्धति के एकीकरण और स्वीकृति में बाधा आ सकती है।

- **वनस्पतियों और जंतु-जगत पर विलुप्ति का खतराः** जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनल (IPCC) की 2019 की एक रिपोर्ट के अनुसार, पशु और पौधों की लगभग 8 मिलियन प्रजातियों में से लगभग 1 मिलियन प्रजातियां विलुप्ति के खतरे का सामना कर रही हैं।
  - पृथ्वी की लगभग 75 प्रतिशत स्थलीय भूभागों और 66 प्रतिशत महासागरीय भाग पर "व्यापक परिवर्तन" देखा गया है।
- **देशज या स्थानीय समुदायों का नियंत्रण नहीं होनाः** पारंपरिक ज्ञान की मूल भावनाओं और तत्वों से परे जाकर पारंपरिक संसाधनों/पद्धतियों के व्यावसायिक उपयोग में वृद्धि देखी जा रही है। इसका मतलब है कि उस पारंपरिक ज्ञान और संसाधन को गलत रूप में प्रस्तुत किए जाने का खतरा है। साथ ही इनका किसी तीसरे पक्ष द्वारा दुरुपयोग किया जा सकता है।
- **कच्चे माल से संबंधित समस्याएंः** कच्चे माल की कम आपूर्ति, घटती गुणवत्ता, कीमतों में वृद्धि और प्रभावकारी कच्चे माल में मिलावट आदि समस्याएं भी विद्यमान हैं।

4. पारंपरिक चिकित्सा को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने कौन-से कदम उठाए हैं?

- **जैव विविधता अधिनियम, 2002:** यह अधिनियम जैव विविधता के संरक्षण, इसके घटकों के संधारणीय उपयोग का प्रावधान करता है। साथ ही, यह जैविक संसाधनों एवं पारंपरिक ज्ञान के उपयोग से उत्पन्न होने वाले लाभों के उचित एवं न्यायसंगत बंटवारे का भी प्रावधान करता है।
- **भारतीय चिकित्सा पद्धति और होम्योपैथी पर राष्ट्रीय नीति (2002):** इसने आधुनिक दवाओं के साथ भारतीय चिकित्सा पद्धतियों को चरणबद्ध तरीके से एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल दिया है। साथ ही, इसने स्वास्थ्य एवं मानव विकास के लिए सभी योजनाओं के पूर्ण एकीकरण को सुरक्षित करने की आवश्यकता को भी रेखांकित किया है।
- **"औषधीय पौधों के संरक्षण, विकास और सतत प्रबंधन" के लिए केंद्रीय क्षेत्रक की योजना (2008):** यह योजना सर्वेक्षण, आविष्कार, स्व-स्थाने (इन-सीटू) संरक्षण, बाह्य-स्थाने (एक्स-सीटू) संरक्षण/ हर्बल गार्डन, संयुक्त वन प्रबंधन समितियों के साथ जुड़ाव, अनुसंधान और विकास आदि के लिए सहायता प्रदान करती है।
- **राष्ट्रीय आयुष मिशन (NAM) (2014):** इसके तहत अग्रलिखित की परिकल्पना की गई है: आयुष सेवाओं तक बेहतर पहुंच प्रदान करना; आयुष शैक्षणिक संस्थानों को मजबूत करना; गुणवत्ता नियंत्रण के कार्यान्वयन की सुविधा प्रदान करना आदि।
- **वैश्विक स्तर पर आयुष पद्धतियों को बढ़ावा देनाः** आयुष मंत्रालय ने पारंपरिक चिकित्सा और होम्योपैथी के क्षेत्र में सहयोग के लिए 18 देशों के साथ अलग-अलग समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं।
  - सहयोगात्मक अनुसंधान/ शैक्षणिक सहयोग के लिए 19 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए हैं।
  - आयुष पद्धतियों के बारे में प्रमाणिक जानकारी का प्रसार करने के लिए 28 देशों में 31 आयुष सूचना सेल स्थापित किए गए हैं।
  - **आयुष निर्यात संवर्धन परिषद** विदेशों में आयुष उत्पादों के पंजीकरण, बाजार अध्ययन और अनुसंधान गतिविधियों के संचालन में आने वाली बाधाओं से निपटती है।
- **नमस्ते (NAMSTE) पोर्टल {राष्ट्रीय आयुष रुग्णता और मानकीकृत शब्दावली इलेक्ट्रॉनिक (NAMSTE) पोर्टल}:** यह आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी चिकित्सा पद्धतियों के लिए मानकीकृत शब्दावली और रुग्णता कोड प्रदान करता है।
- **पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी (TKDL):** इसके तहत योग के विभिन्न पहलुओं/ तकनीकों सहित देश के पारंपरिक औषधीय ज्ञान से संबंधित पेटेंट के दुरुपयोग को रोकने का प्रावधान किया गया है।

बॉक्स 4.1 पारंपरिक चिकित्सा के संरक्षण हेतु अंतर्राष्ट्रीय प्रयास

- **खाद्य और कृषि के लिए पादप आनुवंशिक संसाधनों पर अंतर्राष्ट्रीय संधि (ITPGRFA):** इसके तहत किसानों को पिछले मौसम में उत्पादित उपज का पुनः उपयोग करने की अनुमति प्रदान की गई है।
- **ट्रिप्स (TRIPS) (व्यापार-संबंधी बौद्धिक संपदा अधिकार)** समझौते में यह प्रावधान किया गया है कि सदस्य देश सूक्ष्मजीवों के अलावा अन्य पादपों और जंतुओं को इससे बाहर कर सकते हैं।
- **जैव विविधता पर अभिसमय (CBD):** इसके तहत आनुवंशिक संसाधनों तक पहुंच और पारंपरिक ज्ञान के उपयोग से उत्पन्न होने वाले लाभों के उचित एवं न्यायसंगत बंटवारे पर नागोया प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए गए थे।
- **पारंपरिक चिकित्सा पर पहला वैश्विक शिखर सम्मेलनः** यह सम्मलेन विश्व स्वास्थ्य संगठन और आयुष मंत्रालय ने गांधीनगर (गुजरात) में आयोजित किया था।
- **WHO ग्लोबल सेंटर फॉर ट्रेडिशनल मेडिसिन (GCTM):** यह भारतीय राज्य गुजरात के जामनगर में स्थित है। यह विश्व भर में पारंपरिक चिकित्सा के लिए पहला और एकमात्र वैश्विक आउटपोस्ट सेंटर है।
  - भारत ने इस सेंटर की स्थापना में सहायता करने के लिए अनुमानित 250 मिलियन अमेरिकी डॉलर उपलब्ध कराने का वादा किया है।
  - **GCTM के लक्ष्यः**
    - प्रौद्योगिकी का उपयोग करके पारंपरिक ज्ञान पद्धतियों का एक डेटाबेस तैयार करना।
    - पारंपरिक औषधियों के परीक्षण और प्रमाणन के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों को तैयार करना।
    - विशिष्ट रोगों के समग्र उपचार हेतु प्रोटोकॉल विकसित करना, जिससे कि रोगियों को पारंपरिक और आधुनिक चिकित्सा दोनों से लाभ प्राप्त हो सके।

5. पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण हेतु कौन-से कदम आवश्यक हैं?

- **पादपों को संरक्षित करनाः** औषधीय महत्त्व वाले पादपों की प्रजातियों की सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए दो प्रमुख तरीके हैं: इन सीटू या स्व स्थाने और एक्स सीटू या बाह्य स्थाने संरक्षण। स्व-स्थाने संरक्षण के तहत किसी प्रजाति को उनके प्राकृतिक पर्यावास में संरक्षित किया जाता है, वहीं बाह्य स्थाने संरक्षण में बीज भंडारण, DNA भंडारण, पराग भंडारण, इन विट्रो संरक्षण, फील्ड जीन बैंक और वनस्पति उद्यान आदि शामिल हैं।
- **वैज्ञानिक पुष्टि:** पारंपरिक चिकित्सा के बारे में साक्ष्य और वैज्ञानिक पुष्टि प्राप्त करने की आवश्यकता है ताकि इसका उपयोग करने वाले लोग समझ सकें कि यह चिकित्सा सुरक्षित और प्रभावी है अथवा नहीं।
- **स्वदेशी (देशज) लोगों के अधिकारों की रक्षा करनाः** स्थानीय (देशज) लोगों के अधिकारों को पूर्णतया मान्यता प्रदान की जानी चाहिए और उनका सम्मान

एवं रक्षा की जानी चाहिए, जैसा कि देशज लोगों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र की घोषणा (UN Declaration on the Rights of Indigenous Peoples) में इसका प्रावधान किया गया है। साथ ही, इसमें आत्मनिर्णय का अधिकार; भूमि, क्षेत्र और संसाधनों से संबंधित अधिकार भी शामिल होने चाहिए।

- **अनुसंधान में नैतिक विचार:** पारंपरिक चिकित्सा अनुसंधान पद्धति में नैतिक पद्धतियों एवं प्रक्रियाओं को शामिल किया जाना चाहिए। ऐसा सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त और सामाजिक रूप से प्रासंगिक एवं समावेशी नैतिक ढांचे के विकास और कार्यान्वयन के जरिए किया जा सकता है।
- **मानकीकरण:** पारंपरिक चिकित्सा के मानकीकृत दस्तावेजीकरण को बढ़ावा देने के लिए उन्नत नीतियों का निर्माण किया जाना चाहिए, जिसमें WHO के अंतर्राष्ट्रीय रोगों के वर्गीकरण (WHO International Classification of Diseases: ICD-11) का विस्तारित और त्वरित उपयोग शामिल होना चाहिए।
- IPR **व्यवस्था को मजबूत करना:** पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण हेतु मौजूदा IPR प्रणाली से अलग एक विशिष्ट प्रणाली (सुई जेनेरिस) तैयार की जानी चाहिए।
- **पारंपरिक ज्ञान का वैश्वीकरण:** पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण में समान हित साझा करने वाले देशों के बीच द्विपक्षीय या बहुपक्षीय समझौते स्थापित करके संरक्षण का विस्तार किया जाना चाहिए।
- **आधुनिक चिकित्सा के साथ पारंपरिक चिकित्सा का एकीकरण:** अधिक व्यापक और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए आधुनिक स्वास्थ्य प्रणालियों के साथ पारंपरिक चिकित्सा के एकीकरण की आवश्यकता है।

बॉक्स 5.1 सतत विकास लक्ष्य (SDG) और पारंपरिक ज्ञान

पारंपरिक ज्ञान कई शताब्दियों से स्वदेशी (देशज) लोगों की पहचान, सांस्कृतिक विरासत, सभ्यताओं, आजीविका और प्रतिस्पर्धी रणनीतियों का आधार रहा है। सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को प्राप्त करने और सर्वाधिक गंभीर वैश्विक समस्याओं का समाधान करने में देशज ज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समर्थन प्राप्त हो रहा है। यह निम्नलिखित सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में उपयोगी हो सकता है:

- SDG-1 गरीबी उन्मूलन: औषधीय पादपों का एकीकरण बेहतर आजीविका और सभी रूपों में गरीबी उन्मूलन में योगदान दे सकता है।
- SDG-3 अच्छा स्वास्थ्य और आरोग्यता: पारंपरिक चिकित्सा स्वास्थ्य देखभाल को अधिक न्यायसंगत और किफायती बनाकर बेहतर स्वास्थ्य परिणाम प्राप्त करने में मदद कर सकती है।
- SDG-4 गुणवत्ता परक शिक्षा: पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान की संपदा है जिसे पीढ़ियों तक हस्तांतरित किया जा सकता है।
- SDG-10 असमानताओं में कमी: पारंपरिक ज्ञान स्वास्थ्य देखभाल को अधिक किफायती बनाकर असमानता को कम कर सकता है।
- SDG-15 पृथ्वी पर जीवन: औषधीय पादपों के बढ़ते उपयोग और मांग से वन एवं इसकी जैव विविधता की पहचान करने के साथ-साथ इसे महत्व प्रदान किया जा सकता है।
- SDG-17 वैश्विक साझेदारी: पारंपरिक ज्ञान सहयोग तथा ज्ञान एवं अनुभव के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करके साझेदारी को बढ़ावा दे सकता है।
- सतत विकास की प्रक्रिया को व्यवहार्य और क्रियाशील बनाने के लिए, एक साझा फोकस स्थापित करना महत्वपूर्ण है जो विकास में विभिन्न प्रतिभागियों जैसे कि स्वदेशी (देशज) लोगों के दृष्टिकोण और प्रयासों को एकीकृत कर सके।

6. निष्कर्ष

भारतीय पारंपरिक ज्ञान आरोग्यता के संपूर्ण दृष्टिकोण को समझने का एक समग्र सिद्धांत है। यह केवल बीमारियों को दूर रखने पर ही केंद्रित नहीं है, बल्कि इस उद्देश्य से आगे बढ़ते हुए मन, शरीर और आत्मा के सामंजस्यपूर्ण संतुलन स्थापित करने पर भी ध्यान केंद्रित करता है। प्राचीन ज्ञान में निहित ये पद्धतियां जीवन के सभी पहलुओं के अंतर्संबंध पर बल देती हैं। साथ ही, ये पद्धतियां व्यक्तियों को आत्म-जागरूक रहने और प्रकृति के साथ सद्भाव में रहने की गहरी भावना पैदा करने के लिए भी प्रोत्साहित करती हैं। पारंपरिक ज्ञान राजनीतिक सीमाओं को पार करते हुए आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों के साथ एकीकृत होता जा रहा है। यह इस तथ्य का स्मरण दिलाता है कि "वास्तविक आरोग्यता (वेलनेस) एक ऐसी यात्रा है जो संपूर्ण जगत के पोषण को शामिल करती हो, जिससे कि अधिक संतुलित और संतुष्ट जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त हो सके"।

टॉपिक: एक नज़र में

भारतीय पारंपरिक चिकित्सा पद्धति: विश्व को आरोग्यता का एक उपहार

भारतीय पारंपरिक ज्ञान पद्धति में ऐसे व्यवहारिक ज्ञान, तकनीक और पद्धतियां शामिल हैं जो एक समुदाय के अंदर पीढ़ी-दर-पीढ़ी विकसित हुईं, संरक्षित रखी गईं और स्थानांतरित की जाती रही हैं।

भारतीय पारंपरिक ज्ञान पद्धति के प्रमुख घटक

- **सिविल इंजीनियरिंग:** सिंधु-सरस्वती सभ्यता योजनाबद्ध नगरों का निर्माण करने वाली दुनिया की पहली सभ्यता थी।
- **उन्नत धातु प्रौद्योगिकी:** धातु प्रौद्योगिकी के कारण ही भारत अनेक औजारों के निर्माण में अग्रणी बन सका।
- **वस्त्र उद्योग:** भारत प्राचीन समय से ही सूती और रेशमी वस्त्रों का प्रमुख उत्पादक रहा है।
- **शिपिंग और जहाज निर्माण:** भारत महासागर से होकर की जाने वाली प्रारंभिक ज्ञात व्यापार प्रणालियों में सहभागी रहा है।
- **जल संचयन प्रणालियां:** वैज्ञानिकों का अनुमान है कि भारत में मानव निर्मित लगभग 13 लाख झीलें और तालाब थे।
- **गणित, तर्कशास्त्र और भाषा विज्ञान:** भारतीयों ने एडवांस मैथ का विकास किया, जिसमें शून्य की अवधारणा, दशमलव पद्धति आदि शामिल हैं।
- **कृषि तकनीकें:** भारत में ऐतिहासिक रूप से ही अर्थव्यवस्था में कृषि उत्पादन की विशाल हिस्सेदारी रही है।
- **पारंपरिक चिकित्सा:** भारत ने विश्व को आयुष स्वास्थ्य-देखभाल पद्धति के रूप में एक अनमोल उपहार दिया है।

पारंपरिक चिकित्सा पद्धति वैश्विक स्तर पर सामाजिक आरोग्यता को निम्नलिखित तरीकों से बढ़ावा दे सकती है:

- पारंपरिक चिकित्सा पद्धति **अधिकांश आबादी के लिए स्वास्थ्य देखभाल सेवा का प्राथमिक रूप** है।
- यह **वसुधैव कुटुंबकम के लोकाचार** को बढ़ावा देता है।
- **समसामयिक चुनौतियों** जैसे कि - लंबे समय से चली आ बीमारियों के बढ़ते बोझ, एंटीबायोटिक प्रतिरोधी संक्रमणों के प्रसार आदि **का समाधान करना।**
- इसमें **वर्तमान चुनौतियों (जैसे- क्रॉनिक बीमारियों का बढ़ता बोझ, एंटीबायोटिक-प्रतिरोधी संक्रमणों का प्रसार आदि) के समाधान** की क्षमता है।
- पारंपरिक चिकित्सा पद्धति में मनुष्यों, घरेलू एवं जंगली जीवों, पौधों और समग्र पर्यावरण (पारिस्थितिक तंत्र सहित) का स्वास्थ्य आपस में निकटता से जुड़ा हुआ है और एक-दूसरे पर निर्भर है। इस प्रकार, यह **'वन हेल्थ' दृष्टिकोण** के अनुरूप है।
- **यह वहनीय एवं सुलभ स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ावा देती है।**
- WHO के लगभग 88 प्रतिशत सदस्य देशों में **पारंपरिक चिकित्सा की स्वीकार्यता** है।
- कई विकसित देशों में **पूरक चिकित्सा के रूप में पारंपरिक चिकित्सा का उपयोग** किया जा रहा है।
- पारंपरिक चिकित्सा प्रायः **शरीर, मन और आत्मा के अंतर्संबंध पर विचार करते हुए स्वास्थ्य के प्रति समग्र दृष्टिकोण** पर बल देती है।

बेहतर स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के समक्ष विद्यमान चुनौतियां

- **विनियमन और मानकीकरण का अभाव।**
- IPR **प्रणाली से संबंधित मुद्दे।**
- भारत के बाहर की **फार्मास्युटिकल कंपनियों** और **संस्थाओं** द्वारा यहां के पारंपरिक ज्ञान एवं पद्धतियों का दोहन किया जाना गंभीर चिंता का विषय रहा है।
- पारंपरिक उपचार की अनेक पद्धतियां **आधुनिक फार्मास्यूटिकल्स के समान क्लिनीकल ट्रायल्स और सेफ्टी टेस्टिंग से नहीं** गुजरी हैं।
- **पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के प्रति संदेह और सांस्कृतिक बाधाएं।**
- **वनस्पतियों और जंतु-जगत पर विलुप्ति का खतरा** क्योंकि लगभग 1 मिलियन प्रजातियां विलुप्ति के खतरे का सामना कर रही हैं।
- **देशज या स्थानीय समुदायों का नियंत्रण नहीं होना।**
- **कच्चे माल की कम आपूर्ति, घटती गुणवत्ता, कीमतों में वृद्धि और प्रभावकारी कच्चे माल में मिलावट** आदि समस्याएं भी विद्यमान हैं।

पारंपरिक ज्ञान को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम

- **जैव विविधता अधिनियम, 2002**
- **भारतीय चिकित्सा पद्धति और होम्योपैथी पर राष्ट्रीय नीति (2002)**
- **"औषधीय पौधों के संरक्षण, विकास और सतत प्रबंधन" के लिए केंद्रीय क्षेत्रक की योजना (2008)**
- **राष्ट्रीय आयुष मिशन (NAM)** (2014) आयुष सेवाओं तक बेहतर पहुंच की परिकल्पना करता है।
- सरकार ने पारंपरिक चिकित्सा और होम्योपैथी के क्षेत्र में सहयोग के लिए **18 देशों के साथ अलग-अलग समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर** किए हैं।
- **नमस्ते** (NAMSTE) **पोर्टल** आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी चिकित्सा पद्धतियों के लिए मानकीकृत शब्दावली और रुग्णता कोड प्रदान करता है।
- **पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी (TKDL):** इसके तहत देश के पारंपरिक औषधीय ज्ञान पर पेटेंट के दुरुपयोग को रोकने का प्रावधान किया गया है।

पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण हेतु आवश्यक कदम

- **पादपों को संरक्षित करना:** पादपों का स्व-स्थाने और बाह्य-स्थाने संरक्षण।
- पारंपरिक चिकित्सा के बारे में **साक्ष्य और वैज्ञानिक पुष्टि प्राप्त करने की आवश्यकता** है।
- **देशज लोगों के अधिकारों की रक्षा करना।**
- **पारंपरिक चिकित्सा अनुसंधान में नैतिक पद्धतियों और प्रक्रियाओं** को शामिल करना।
- पारंपरिक चिकित्सा के मानकीकृत दस्तावेज़ीकरण को बढ़ावा देना।
- **IPR व्यवस्था को मजबूत बनाना।**
- **पारंपरिक ज्ञान का वैश्वीकरण।**
- **आधुनिक चिकित्सा के साथ पारंपरिक ज्ञान का एकीकरण।**

भारतीय पारंपरिक ज्ञान आरोग्यता के संपूर्ण दृष्टिकोण को समझने का एक समग्र सिद्धांत है। यह केवल बीमारियों को दूर रखने पर ही केंद्रित नहीं है, बल्कि इस उद्देश्य से आगे बढ़ते हुए मन, शरीर और आत्मा के सामंजस्यपूर्ण संतुलन स्थापित करने पर भी ध्यान केंद्रित करता है। प्राचीन ज्ञान में निहित ये पद्धतियां जीवन के सभी पहलुओं के अंतर्संबंध पर बल देती हैं। साथ ही, ये पद्धतियां व्यक्तियों को आत्म-जागरूक रहने और प्रकृति के साथ सद्भाव में रहने की गहरी भावना पैदा करने के लिए भी प्रोत्साहित करती हैं।

बॉक्स और चित्र

बॉक्स 1.1: एक छोटी सी वार्ता! हल्दी के औषधीय गुण 3

बॉक्स 2.1 उभरते हुए आयुष क्षेत्रक के आर्थिक आयाम 4

बॉक्स 3.1: पारंपरिक ज्ञान और बौद्धिक संपदा अधिकार 5

बॉक्स 4.1 पारंपरिक चिकित्सा के संरक्षण हेतु अंतर्राष्ट्रीय प्रयास 6

बॉक्स 5.1 सतत विकास लक्ष्य और पारंपरिक ज्ञान 7

चित्र 1: आयुष पद्धति 2

चित्र 2: वन हेल्थ दृष्टिकोण 4

चित्र 3: प्राचीन भारतीय औषधीय पांडुलिपि 4

ISHITA KISHORE

GARIMA LOHIA

UMA HARATHI N

39 in Top 50 Selection in CSE 2022

8 in Top 10 Selection in CSE 2021

ANKITA AGARWAL

GAMINI SINGLA

AISHWARYA VERMA

UTKARSH DWIVEDI

YAKSH CHAUDHARY

SAMYAK S JAIN

ISHITA RATHI

PREETAM KUMAR

दिल्ली

HEAD OFFICE
Apsara Arcade, 1/8-B, 1st Floor, Near Gate-6, Karol Bagh Metro Station, Delhi

MUKHERJEE NAGAR CENTRE
Plot No. 857, Ground Floor, Mukherjee Nagar, Opposite Punjab & Sindh Bank, Mukherjee Nagar, Delhi

FOR DETAILED ENQUIRY
Please Call:
+91 8468022022,
+91 9019066066

SHUBHAM KUMAR
CIVIL SERVICES EXAMINATION 2020

ENQUIRY@VISIONIAS.IN /VISION_IAS WWW.VISIONIAS.IN /C/VISIONIASDELHI VISION_IAS /VISIONIAS_UPSC

अहमदाबाद भोपाल चंडीगढ़ गुवाहाटी हैदराबाद जयपुर जोधपुर लखनऊ प्रयागराज पुणे राँची सीकर